Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

दयानन्द सरस्वती का अछूतोद्धार में योगदान

मदन लाल*

* एम.ए. (इतिहास), सरवरी ब्लॉक कल्याणपुर, बालोतरा (राज.) भारत

प्रस्तावना – महर्षि दयानन्द सरस्वती भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन के पुरोधा में से एक थे। 19 वीं सदी में भारतीय समाज में अनेक सामाजिक, धार्मिक बुराईयों से ग्रस्त था। एक तरफ भारत पर अंग्रेजों ने अधिकार कर रखा थाअ वही दूसरी और भारतीय समाज की स्वंय की कमजोरियां लोगों के जीवन बद्तर बना रही थी। इन सामाजिक धार्मिक बुराईयों के विरोध में सबसे पहले मशाल राजा राम मोहन राय ने जलाई थी। राम मोहन राय पश्चिमी सभ्यता संस्कृति से प्रभावित थे उन्होंने वेदों की प्रमाणिकता का खण्डन किया। कालांतर में स्वामी दयानन्द सरस्वती पैदा हुआ। दयानन्द सरस्वती ने वेदों के आधार पर भारतीय समाज में विद्यमान बुराईयों का विरोध किया था। दयानन्द सरस्वती का जन्म 1824 में गुजरात में हुआ था।उन्होंने वेदों की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की थी।

शिवरात्रि को एक घटी घटना ने दयानन्द सरस्वती के जीवन को बदल दिया। शिवरात्रि के दिन शिव पुराण सुनाया गया जिसमें शिव की कथा सुनाई गया स रात्रि जागरण के दौरान सभी सो गए थे तब अचानक चूहे भगवान शिव के प्रसाद को खाने लग गया।

यह देखकर दयानन्द को लगा यह वही शिव है जो कैलाश पर्वत पर निवास करते है जिन्होंने अनेक असुरों का वध किया था जो अपने प्रसाद की रक्षा नहीं कर सकते वो सृष्टि की क्या रक्षा करेगा यही से उनके मन में वैराग्य पैदा हो गया।

इसके उपरांत 15 वर्ष तक वो इधर उधर घूमते रहे। 1860 में मथुरा गए और स्वामी विरजानन्द से मिले वही उन्होंने वेदों की शिक्षा प्राप्त की थी। 1863 में उन्होंने झूठे धर्मो का स खण्डन करने के लिए पाखण्ड खडीनी पताका लहराई। 1875 में बंबई में आर्य समाज की स्थापना की जिसका मुख्य उद्देश्य प्राचीन वैदिक धर्म की स्थापना करना था। उन्होंने समकालीन हिन्दू समाज में व्याप्त बुराइयाँ का वेदों के आधार पर खण्डन किया। उन्होंने ब्राह्मणों के धार्मिक सामाजिक सर्वोचता के दावे की खुलकर चुनौती दी तथा इस बात का मजाक उड़ाया की ब्राह्मण मनुष्य तथा ईश्वर के बीच मध्यस्थ है। उन्होंने वेदों की और लौटो का नारा दिया था।

स्वामी जी ने आर्य समाज के बंबई में 28 निम्न नियम बनाएं थे जो इस प्रकार है :

1. सब मनुष्यों के हितार्थ आर्यसमाज का होना आवश्यक है।
2. इस समाज में मुख्य स्वत: प्रमाण वेदों को ही माना जायेगा।
3. इस समाज में प्रतिदेश के मध्य एक प्रधान–समाज होगा, दूसरे शाखा–प्रतिशाखा समझे जायेंगे।
4. सब समाजों की व्यवस्था प्रधान–समाज के अनुकूल होगी।
5. प्रधान–समाज में सत्योपदेश के लिए संस्कृत और आर्यभाषा के पुस्तकालयों का प्रबंध होगा। एक आर्यप्रकाश साप्ताहिक पत्र निकालेगा।
6. प्रत्येक समाज में एक प्रधान होगा, दूसरा मंत्री। पुरुष और स्त्री दोनों ही समाज के सभासद् बन सकेंगे।
7. समाज का प्रधान इस समाज की व्यवस्था करेगा और मंत्री सबके पत्रों के उत्तर तथा सबके नाम की लेख व्यवस्था करेगा।
8. इस समाज में सत्पुरुष, सदाचारी और परोपकारी सभासद् लिये जायेंगे।
9. प्रत्येक गृहस्थ सभासद् को उचित है कि, वह गृहस्थ से अवकाश पाकर अधिक पुरुषार्थ इस समाज की उन्नति के लिये करे और विरक्त हों तो समाज उन्नति में ही नित्य तत्पर रहें।
10. प्रत्येक सप्ताह में एक दिन प्रधान, मंत्री तथा सभासद् समाज–स्थान में एकत्रित हों, और सब कामों से इस काम को मुख्य समझें।
11. यह नियम कार्यक्रम का प्रतिपादन करता है– कार्यक्रम, में गान, मंत्रपाठ, मंत्रों की व्याख्या आदि के अतिरिक्त परमेश्वर, सत्यधर्म, सत्यनीति, सत्योपदेश का प्रतिपादन हो। सत्यधर्म में– सिद्धान्त रूपी धर्म तथा उन सिद्धान्तों का व्यावहारिक प्रयोग सत्यनीति कहलाता है।
12. प्रत्येक सभासद् शतांश चन्दे के रूप में दें ओर चन्दे की आय से आर्यसमाज, आर्य विद्यालय, और आर्य समाचार पत्र चलाये जायें।
13. जो मनुष्य इन कामों की उन्नति और प्रचार के लिये, जितना जितना प्रयत्न करे, उसका उतना ही अधिक सत्कार, उत्साह–वृद्धि के लिये होना चाहियें।
14. इस समाज में वैदिक स्तुति, प्रार्थना, उपासना करना आर्यमात्र के लिये आवश्यक है।
15. गर्भाधान से अन्त्येष्टि पर्यन्त सभी संस्कार वेदोक्त रीति से किये जायेंगे।
16. आर्य विद्यालय में वेदादि सनातन आर्ष ग्रन्थों का पठन पाठन हुआ करेगा और सब स्त्री पुरुषों को वेदोक्त रीति से शिक्षा दी जायेगी।
17. इस समाज में स्वदेश के हितार्थ दो प्रकार की शुद्धि के लिये प्रयत्न किया जायेगा– एक परमार्थ, दूसरा व्यवहार, इन दोनों का शोधन तथा समस्त संसार के हित की उन्नति की जायेगी।

टिप्पणी– इस नियम में स्वदेश की उपेक्षा नहीं की गई है अपितु उसका अन्तिम लक्ष्य संसार का हित करना रखा गया है। सब अपने देश के

हित में यत्नवान् हों, परन्तु देश-हित का भी अन्तिम लक्ष्य विश्वहित हो।

18. इस समाज में न्याय, पक्षपात से रहित प्रत्यक्षादि प्रमाणों से यथावत् परीक्षित सत्यधर्म, वेदोक्त ही माना जायेगा, इसके विपरीत कदापि नहीं है।
19. इस समाज की ओर से श्रेष्ठ विद्वान् लोग सदुपदेश करने के लिये समयानुकूल सर्वत्र भेजे जायेंगे।
20. स्त्री और पुरुष इन दोनों में विद्याभ्यास के लिये, यथासंभव प्रत्येक स्थान में आर्य विद्यालय पृथक्-पृथक् बनाए जायेंगे। स्त्रियों की पाठशाला में अध्यापिका आदि का सह प्रबन्ध स्त्रियों द्वारा ही किया जायेगा और पुरुषों को पुरुषों द्वारा, इसके विरुद्ध नहीं है।
21. इन पाठशालाओं की व्यवस्था प्रधान, आर्यसमाज के अनुकूल पालन की जायेगी।
22. इस समाज में प्रधानादि सब सभासदों को परस्पर प्रीतिपूर्वक, अभिमान, हठ, दुराग्रह और क्रोधादि दुर्गुणों को छोडकर उपकार और सुहृद्भाव से निर्वैर होकर, स्वात्मवत् सबके साथ वर्तना चाहिये।
23. विचार के समय सब व्यवहार में जो न्याय युक्त, सर्व हित साधक, सत्य बात स्थिर हो, वह सब सभासदों पर प्रकाशित कर, वही बात मानी जाये।
24. जो मनुष्य इन नियमों के अनुकूल आचरण करने वाला, धर्मात्मा, सदाचारी हो, उसको उत्तम सभासदों में प्रविष्ट करना, इसके विपरीत को साधारण समाज में रखना और अत्यन्त प्रत्यक्ष दुष्ट को समाज से निकाल ही देना।
25. आर्यसमाज, आर्य विद्यालय, आर्य-पत्र, और आर्य समाज का कोष इन चारों की रक्षा और उन्नति प्रधानादि सब सभासद् तन, मन, धन से सदा किया करें।
26. जब तक नौकरी करने वाला और कराने वाला, आर्य समाजस्थ मिले, तब तक और की नौकरी न करे, और न किसी अन्य को नौकर रखे। दोनों परस्पर स्वामी सेवक भाव से यथावत् वर्तें।
27. जब विवाह, जन्म मरण, अथवा अन्य कोई दान करने का अवसर उपस्थित हो, तब आर्य समाज के निमित्त धन आति दान किया करें। ऐसा धर्म का काम कोई दूसरा नहीं है, ऐस समझ करें, इसको कभी न भूलें।
28. इन नियमों में से यदि कोई नियम घटाया-बढ़ाया जायेगा, सर्वश्रेष्ठ सभासदों के विचार ही से सबको विदित करके, ऐस करना होगा।

इन नियमों को लाहौर में पुन सम्पादित किया गया और इनको संक्षिप्त रूप प्रदान किया गया जो आज तक परवर्तित नहीं किए गए ये इस प्रकार से है -

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्व व्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, और सुनना सुनाना, सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिएँ।
6. संसार का उपकार करना, इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये, और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

इसके बाद स्वामी जी सम्पूर्ण पंजाब का दौरा किया। अमृतसर, गुरुदासपुर, जालंधर, फिरोजपुर रावल पिंडी इत्यादि स्थानों पे प्रचार प्रसार का कार्य किया।

स्वामी जी वैदिक व्यवस्था का समर्थन करते थे स उन्होंने वर्ण व्यवस्था को सुधरे रूप में प्रस्तुत किया। उनकी वर्ण व्यवस्था जन्म पर नहीं बल्कि कर्म पर आधारित थी। उनके अनुसार कोई भी व्यक्ति अपने कर्मो के अनुसार किसी भी वर्ण को ग्रहण कर सकता है। उनका विचार था की शूद्र का बालक न केवल अक्षर ज्ञान का अधिकारी अपितु वेद पढ़ने का भी अधिकारी है। इस प्रकार स्वामी जी का मानना था की कोई भी व्यक्ति अपने कर्मो और गुणों के आधार पर किसी भी वर्ण को धारण कर सकता था।

स्वामी जी भारतीय सामाजिक बुराईयों पर कठोर प्रहार किया उन्होंने शुद्धि आंदोलन के माध्यम से अन्य धर्म स्वीकार कर चुके लोगों को पुन हिन्दू धर्म स्वीकार करवाया।

स्वामी जी भारतीय जाति व्यवस्था की खुलकर आलोचना की एक और इस प्रथा को हिन्दू धर्म की प्रतिरक्षा का शैर्य है वही दूसरी और हिंदुओ की राजनीतिक, सामाजिक पतन के लिए उत्तारदायी माना स स्वामी जी ने जन्म पर आधारित व्यस्था की खुलकर आलोचना की उनके अनुसार समाज में सभी को सम्मान अवसर प्राप्त होने चाहिए। इस प्रकार स्वामी जी ने जाति व्यस्था को भारतीय समाज का पतन का मुख्य कारण माना।

वैदिक काल में महिलाओं को समाज में उच्च स्थान मिला हुआ था। उन्हें अपने वर चुनने, शिक्षा प्राप्त करने तथा सभी प्रकार के धार्मिक कार्यो में भाग लेने का अधिकार प्राप्त था। आर्य समाज ने स्त्री शिक्षा को महत्व दिया स स्त्रियों की गिरी हुई दिशा के बाल विवाह, बहु विवाह जैसी प्रथाओं को जिम्मेदार माना। आर्य समाज ने बाल विवाह का विरोध किया और 16 वर्ष से कम आयु की लड़कियों के विवाह बंद करने पर बल दिया।

स्वामी जी अंतर्जातीय विवाह और विधवा विवाह के समर्थक थे। उन्होंने नियोग प्रथा का भी समर्थन किया जिसके अन्तर्गत संतान उत्पति के लिए अपने निकट संबंधी से शारीरिक संबंध स्थापित किए जाते थे। आर्य समाज ने कई विधवाओं के विवाह करवाये थे। आर्य समाज में जाति पाती के लिए कोई जगह नहीं थी। उन्होंने अछूतोद्धार के खूब कार्य किए।

इस प्रकार स्वामी जी ने वैदिक व्यवस्था के माध्यम से भारतीयों में निरंतर बढ़ती हुई हीन भावनाओं को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने देश की कुप्रथाओ, अंधविश्वासों का विरोध किया स यह मूर्ति पूजा के भी कटर विरोधी थे। अवतारवाद का खुलकर विरोध किया। भारतीय समाज में विद्यमान उच्च नीच को भारतीय समाज के पतन का मुख्य कारण माना।

सुभाष चंद्र ने दयानन्द सरस्वती के बारे में कहा था कि 'महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो इसके आचार-सम्बन्धी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरुद्धार को उत्तारदाता हैं।'

हिन्दू समाज का उद्धार करने में 'आर्यसमाज' का बहुत बड़ा हाथ है। राम-कृष्ण मिशन ने बंगाल में जो कुछ किया, उससे कहीं अधिक आर्यसमाज ने पंजाब और उत्तर प्रदेश में किया। पंजाब का प्रत्येक नेता आर्यसमाजी है।

स्वामी दयानन्द को मैं एक धार्मिक और सामाजिक सुधारक तथा कर्मयोगी मानता हूं। संगठन कार्यों में सामर्थ्य और प्रसार की दृष्टि से आर्यसमाज अनुपम संस्था है। संगठन कार्य, दृढ़ता, उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्यसमाज की समता कोई समाज नहीं कर सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सिंह हरशरण, स्वामी दयानन्द सरस्वती,2015 लेनिन मिडिया प्रा. लिमिटेड, गजियाबाद उत्तरप्रदेश।
2. वेदालंकार वेदप्रकाश, स्वामी दयानन्द 2005, अग्रवाल प्रकाशन अम्बाला।
3. काजला निकिता, समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती, 2016 श्वेता बुक एजेंसी, राजगढ़ रोड पिलानी।
4. ग्रोवर, यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास नवीन मूल्यांकन, एस चंद एण्ड कम्पनी 2000,नई दिल्ली।
5. मूलर मैक्स, राममोहन राय से परमहंस तक,2013, विद्या विहार नई दिल्ली।

****